स्नातक:हिंदी(प्रतिष्ठा),द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र

21 वीं व्याख्यानमाला

-डॉ अभिमन्यु कुमार

केदारनाथ अग्रवाल की काव्य भाषा

केदार जी की भाषा हिन्दी के उस प्रचलित रूप के आस-पास चलती है जिसे भारत का आम़ हिन्दी भाषी बोलता और समझता है। उन्होने अपनी काव्य-भाषा के माध्यम से भी कबीर, तुलसी, प्रेमचंद और निराला की लोकवादी परंपरा को आगे बढ़ाया है। उनकी भाषा लोक प्रचलित जन भाषा है। केदार ने तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी-अंग्रेजी, अरबी, फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया है। अतः भाषा के शिल्प का जहाँ तक तात्पर्य

है - तो शब्द चयन के स्तर पर वे किसी वाद के आग्रही नहीं हैं। वे उन शब्दों का चयन करते हैं जो लोक-संवेदना को प्रकट करने में सहजतः सक्षम हैं। काव्य शिल्प मुक्त छंद है। परंतु लय, गीत और बिंब-विधान की बहुलता पायी जाती है। पूरी कविता में एक ऐसी सरिता का मंथर प्रवाह देखने को मिलता है जो पूरे काव्य को गीला किए हुए दोनों तटों से बांधे रहता है।

केदार की भाषा कभी एकदम सीधी-सहज, तो कभी बिंबधर्मी हो उठती है। किन्तु शब्दों के चयन की कुशलता आर्थात कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कह देने में वे निराला या शमशेर की तरह निपुण हैं। केदार की

कविता की पंक्तियों में एक एहसास भरा होता है। शमशेर पर लिखा एक कभी न भूला पाने वाला शब्द-चित्र देखें-

शमशेर - मेरा दोस्त

चलता चला जा रहा है अकेला

कंधे पर लिए नदी

मूंड पर धरे नाव।

केदार ने कविता को उस चरम लय तक पहुँचाने का सपना देखा था जिसमें कवि स्वयं लय हो जाय-

जैसा कोई सितारिया द्रुत सितारा को बजाए

लय में पहुँच कर वह स्वयं लय हो जाय
फिर न वह सितारा को बजाय
चलता हाथ ही बजाय।

केदार बाबू के काव्य की भाषा बिंबात्मक गतिशीलता लिए हुए है, इस 'संवेगीय-चित्र-भाष-क्षमता' के कारण पूरा कविता-विधान 'जीती हुई जिंद़गी' ज़ान पड़ती है-

दिन हिरण सा चौकसी भर के चला
धूप की चादर सिमट कर खो गई,
खेत घर वन गाँव का
दर्पन किसी मोड़ डाला

शाम की सोना चिरैया

नीड़ में जा सो गई।

कहा जा सकता है कि केदार नाथ अग्रवाल की कविताएं न केवल अपने कथ्य में अनूठी है, वरन भाषा और शिल्प-रचना में भी अनूठी हैं। कथ्य और भाषा व शिल्प के स्तर पर केदार नाथ अग्रवाल लोकधर्मी-संवेदना के कवि हैं एवं उनके काव्य में लोक-संवेदना व्यक्त हुई है। केदार जी की मान्यता रही है कि किसी कवि के हृदय में कविता, पहले से रची हुई कृति नहीं होती। रचना के लिए कवि को अपना इंद्रिय-जगत खुला एवं सजग रखना पड़ता है। इंद्रिय-बोध से वह

बहिर्जगत का ज्ञान प्राप्त करता है और यही ज्ञान जब कवि को संवेदित करते हुए अपने समय के प्रति सजग करता है, तो कविता का सृजन संभव होता है। केदार जी की कविता के बारे में उनके मित्र कवि शमशेर बहादुर सिंह की राय रही है कि 'उनकी कविताओं में किसी तरह का उलझाव नहीं होता, बनावट नहीं होती और अभिव्यक्ति में हिचक या कमजोरी नहीं होती।'